अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित साहितय का अध्ययन

अध्याय द्वितीय

शोध – साहित्य

2.1 प्रस्तावना

वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन बहुत महत्वपूर्ण होता है। जिससे शोधकार्त को एक नया दिशा–निर्देश प्राप्त होता है एवं संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन को हम निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत और अच्छे से समझ सकते है।

1. संबंधित साहित्य के अध्ययन से अनुसंधायक अलाभप्रद व अनुपयोगी समस्याओं से बच जाता है। वह ऐसे क्षेत्र चुना सकता है। जिनमें लाभदायक खोज हो सकेगी और उसके प्रयासों से ज्ञान में सार्थक वृद्धि होगी।
2. संबंधित साहित्य की समीक्षा से हम पहले से ही सिद्ध कार्यो को अनजाने दोहराने से बच सकते है। यदि अध्ययन के परिणामों की स्थिरता व वैधता भलीप्रकार सिद्ध हो चुकी है तो उसे दोहराना निरर्थक है।
3. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक अनुसंधान की क्रियाविधि को समझ सकता है और अध्ययन में प्रयुक्त औजारों की भी जानकारी उसे भलीप्रकार प्राप्त होती है।
4. संबंधित साहित्य की समीक्षा करने का अंतिम व महत्वपूर्ण विशेष कारण यह भी जानना है कि पिछले अनुसंधायकों ने अपने अध्ययन में और आगे अनुसंधान के लिए क्या अनुाशंसाएँ की थी।

2.2 संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. बोहरा (1977)

व्यवसायिक चयन एवं बुद्धिमता, शैक्षिक अभिरूचि, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंध पर शोधकार्य किया। यह अध्ययन पॉलीटेक्निक के विद्यार्थियों पर किया गया। इस अध्ययन में स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया। जिसके अंतर्गत व्यवसायिक चयन, बुद्धिमता, शैक्षिक अभिरूचि व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सह–संबंध नही पाया गया।

2. सिंह (1979)

शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिलाषा से संबंधित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तथ्य पर आधारित एक अध्ययन किया। जिसमें स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने पाया कि व्यवसायिक अभिलाषा के अंतर्गत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने अलग-अलग व्यवसायों को प्राथमिकता दी।

3. गौतम (1981)

विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन तथा उनके अभिभावकों के व्यवसायिक परिपेक्षों का अध्ययन किया। इस शोध कार्यो हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अंतिम वर्ष के एवं हाईस्कूल के प्रथम वर्ष के 130 विद्यार्थियों का चयन किया। शोधकर्ता उपकरण के रूप में एक व्यवसायिक चयन सूची बनायी जिसमें अध्यापकों एवं छात्रों की सहायता से जानकारी प्राप्त की। इस अध्ययन में विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन तथा उनके अभिभावकों के व्यवसायिक परिपेक्ष के स्वरूप में सह-संबंध पाया गया।

4. सानुखिया (1984)

ने असम राज्य में व्यवसायिक शिक्षा के उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम से संबंधित अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की व्यवसायिक रूचियाँ उनके निवास स्थान की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। अतः किसी भी क्षेत्र में व्यवसायिक पाठ्यक्रम छात्रों की योग्यता रूचि, भावी, आवश्यकता, भौगोलिक परिस्थिति एवं उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल को ध्यान में रखते हुए निर्धारित करने चाहिए।

5. चट्ढा (1982)

ग्रामीण एवं शहरी हाईस्कूल के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि से संबंधित मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक तत्वों का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए कक्षा 10 के 713 बालकों को न्यायदर्श के रूप में लिया गया ये विद्यार्थी चंढ़ीगढ़ एवं रोपर जिले के 6 ग्रामीण विद्यालयों से चुने गए थे। इसमें जलोटा द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता परीक्षण **धामी और हीसाज** की सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची, सिंह एवं सिंह की सामंजस्य प्रश्नावली, व्यवसायिक आकांक्षा पत्र

शोधकर्ता द्वारा उपयोग में लाए गए। व्यवसायिक आकांक्षा पत्र शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित किया गया निष्कर्ष में 48% शहरी बालकों की इंजीनियर बनने कि आकांक्षा थी 10% शहरी बालकों की स्वास्थ्य संबंधी व्यवसाय में जाने की आकांक्षा थी। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 12% छात्र इंजीनियर एवं 6% स्वास्थ्य संबंधी व्यवसाय में जाना चाहते थे।

6. दुबे (1974)

असम के आदिवासी एवं गैर आदिवासी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की व्यवसायिक और शैक्षिक आकांक्ष का अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला की आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा में कोई अंतर नहीं है।

7. श्रीवास्तव (1983)

मिर्जापुर के आदिवासी विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जिसमें उच्च जाति के विद्यार्थियो को व्यवसायिक रूचि .13... व्यवसायों तक सीमित थी, जबकि पिछड़े एवं आदिवासी विद्याथियों की व्यवसायिक रूचि 9 व्यवसायों तक सीमित थी। आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में कोई अंतर नही पाया गया।

8. अमीरंजन (1987)

आदिवासी और गैर आदिवासी बी.एस.सी. (कृषि) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में बी.एस.सी. (कृषि) में अध्ययनरत आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अंतर पाया गया एवं आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा से कम थी।

9. मेहता, भटनागर, जैन (1993)

शिलाँग (मेघालय) के हाईस्कूल में अध्ययनरत आदिवासी विद्यार्थियों के घर की पृष्ठभूमि

चुनिंदा मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक व्यवसायिक योजना चरों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य मेघालय के शिक्षा विभाग एवं शिक्षाविदों को विद्यालयों में आवश्यक निर्देशन सेवा एवं उसकी प्रकृति से अवगत कराना था। ताकि निर्देशन सेवाओं की योनजा बनाने में सहायता मिले

एंव इसका उद्‌देश्य हाईस्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक और व्यवसायिक विकास में मनोवैज्ञानिक और वातावरणीय चरों की भूमिका का अध्ययन करना था। अध्ययन में विद्यार्थी सूचना पत्र, शैक्षिक योजना प्रश्नावाली, रेवे प्रोग्रेसिव मेट्रेसिस,

10. सचिदानंद (1974)

आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए। विद्यालय में पढ़ने वाले आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवासयिक आकांक्षा से कम थी।

11. लिंगड़ोह (1976)

महाविद्यालय में अध्ययनरत आदिवासी तथा गैर आदिवासी बालक बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरण व्यवसायिक आकांक्षा और परिवार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया।

अध्ययन में आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवासयिक आकांक्षा 0.01 स्तर पर अंतर पाया गया।

12. लखोबा (1986) प्रभालचंद्र (1989)

इन्होंने आदिवासी क्षेत्र के समस्या एवं रूचियों का अध्ययन किया। आदिवासी को उपलब्ध शैक्षिक अवसरों का अध्ययन किया लखोबा के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आदिवासी छात्राओं की तुलना ने गृह कार्य करने में अधिक समस्या होती है तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का अध्ययन के साथ अच्छा सामंजस्य है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कमी का मुख्य कारण इनके शिक्षा के पिछड़ेपन पालकों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और प्रेरण की कमी है।

13. गुप्ता बी.एस. (1988)

अनुसूचित जनजाति एवं अनु. जाति के विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध में यह पाया गया की श्रेणीबद्ध और समूह में गैर अनुसूचित जाति के छात्रों का निष्पादन अनुसूचित जाति के

छात्रों से अधिक है। अनु. जाति जनजाति एवं पिछड़े वर्ग छात्रों का निष्पादन छात्राओं की तुलना में कम है।

14. अचाले सखाराम (1990)

मनावर तहसील धार जिले के आदिवासी छात्रों की शैक्षिक प्रगति में पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिससे निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि छात्रों के जीवन में प्रमुख कठिनाई उनकी निम्न आर्थिक स्थिति तथा भाषा में कठिनाई रही।

15. चन्द्रर प्रभाव (1990)

हाईस्कूल के आदिवासी छात्रों की शिक्षा और व्यवसायिक रूचि में बुद्धिलब्धि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में संबंधों का अध्ययन किया निष्कर्ष मे पाया गया कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों की तुलना के प्राप्तांक सीमित और शिक्षण में ज्यादा तथा तकनीकी और व्यवसायिक रूचि कम है। उच्च उपलब्धि स्तर के आदिवासी छात्रों की वैज्ञानिक व्यवसायिक रूचि निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में ज्यादा है।

16. गर्ग अश्वनी कुमार (2000)

आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि परिवार के व्यवसाय का सार्थक प्रमाण दिखाई देता है।